



बाबा बैद्यनाथ धाम के श्रद्धालुओं की आस्था का तुलनात्मक अध्ययन:— विभिन्न आयु वर्ग एवं क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषण

नाम — राजीव शंकर

शोधार्थी (शिक्षा शास्त्र)

सोना देवी विश्वविद्यालय, घाटशिला, झारखण्ड

ईमेल आई डी. & rajivshankar24@gmail.com

Subject - Department of Education

ABSTRACT

शोध का विषय —

1. प्रस्तावना (Introduction)

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में गणना योग्य ' रावणेश्वर बैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग ' न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि यह विविध संस्कृतियों और आयु वर्गों के मिलन का संगम भी है। वर्तमान शोध में देवघर आने वाले श्रद्धालुओं की मानसिक और व्यावहारिक आस्था के स्वरूप का विश्लेषण किया गया है।

2. शोध प्रविधि (Methodology)

प्रस्तुत शोध ' वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधि ' पर आधारित है। आंकड़ों के संग्रहण हेतु 150 उत्तरदाताओं का चयन ' यादृच्छिक प्रतिचयन ' (Random Sampling) विधि द्वारा किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों हेतु प्रश्नावली और साक्षात्कार पद्धति का प्रयोग किया गया है।

3. मुख्य निष्कर्ष (Key Findings)

आयुगत भिन्नता:— शोध में पाया गया कि युवा वर्ग (36.6%) में आस्था का आधार मनोवैज्ञानिक शांति और भविष्य की सुरक्षा है। इसके विपरीत, वृद्ध वर्ग (20%) में पूर्ण समर्पण और मोक्ष की भावना प्रबल है।

क्षेत्रीय प्रभाव:— बिहार और झारखंड के स्थानीय श्रद्धालुओं में ' पारिवारिक संस्कृति ' का प्रभाव अधिक है, जबकि अन्य राज्यों (जैसे बंगाल, दक्षिण भारत) के श्रद्धालुओं में ' तीर्थाटन और दार्शनिक ' दृष्टिकोण की प्रधानता है।

आधुनिकता का प्रभाव:— डिजिटल माध्यमों (सोशल मीडिया / ऑनलाइन दर्शन) का प्रभाव युवा वर्ग की आस्था को अभिव्यक्त करने के तरीकों में स्पष्ट बदलाव ला रहा है।

4. निष्कर्ष (Conclusion)

अध्ययन यह सिद्ध करता है कि यद्यपि आयु और क्षेत्र के आधार पर दर्शन की पद्धति और अपेक्षाओं में अंतर है, परंतु ' बाबा ' के प्रति अटूट विश्वास ' एक सार्वभौमिक सूत्र (Universal Thread) के रूप में कार्य करता है। यह शोध देवघर की सामाजिक – सांस्कृतिक विरासत को समझने में सहायक सिद्ध होगा।

मुख्य शब्द (Keywords):— बैद्यनाथ धाम , श्रद्धालु , आस्था , तुलनात्मक अध्ययन , आयु वर्ग, क्षेत्रीय प्रभाव , देवघर , सांस्कृतिक विरासत ।

FULL RESEARCH PAPER

शोध का विषय — “ बाबा बैद्यनाथ धाम के श्रद्धालुओं की आस्था का तुलनात्मक

अध्ययन:— विभिन्न आयु वर्ग एवं क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषण। ”

प्रस्तावना —

बाबा बैद्यनाथ धाम न केवल एक धार्मिक केंद्र है, बल्कि यह सांस्कृतिक एकता का प्रतीक भी है। ' हृदय पीठ ' के रूप में विख्यात यह स्थल ' कामना लिंग ' के लिए जाना जाता है। बदलते परिवेश में , जहाँ आधुनिकता का प्रभाव बढ़ा है , वहीं आस्था के स्वरूप में भी परिवर्तन देखे गए हैं। इस शोध के माध्यम से हम आस्था के पारंपरिक और आधुनिक स्वरूपों के बीच एक तुलनात्मक सेतु बनाने का प्रयास करेंगे।

शोध के उद्देश्य (Objectives of Research)

विभिन्न आयु वर्गों (Age Groups) में श्रद्धा और भक्ति के व्यावहारिक अंतर का विश्लेषण करना।
क्षेत्रीय आधार (Regional Context) पर श्रद्धालुओं की प्राथमिकताओं और उनकी तीर्थयात्रा की पद्धतियों को समझना।
धार्मिक पर्यटन और आध्यात्मिक संतुष्टि के बीच के संबंधों की व्याख्या करना।

शोध कार्यप्रणाली (Research Methodology)

नमूना चयन (Sampling):— 150 उत्तरदाताओं (Respondents) का चयन किया गया, जिनमें 18 – 30 वर्ष, 31 – 50 वर्ष और 50 वर्ष से अधिक के श्रद्धालु शामिल हैं।

डेटा संग्रह:— प्रश्नावली (Questionnaire) और व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से प्राथमिक डेटा एकत्रित किया गया।

क्षेत्रीय वर्गीकरण:— स्थानीय (देवघर), क्षेत्रीय (बिहार, बंगाल, ओडिशा) और राष्ट्रीय/अंतरराष्ट्रीय स्तर के श्रद्धालुओं को शामिल किया गया।

तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis)

1.) आयु वर्ग के आधार पर (By Age Group)

आयु वर्ग	आस्था का केंद्र बिंदु	माध्यम
18 – 30 वर्ष	(युवा) मानसिक शांति और करियर हेतु संकल्प (ऑनलाइन दर्शन, डिजिटल दान)	तकनीक का प्रयोग
31 – 50 वर्ष	(प्रौढ़) पारिवारिक सुख – समृद्धि और मन्नतें संकल्प	पारंपरिक अनुष्ठान और
50 वर्ष	(वृद्ध) मोक्ष, आत्मिक शांति और सांस्कृतिक निरंतरता पूर्णतः शास्त्रीय विधि	कठोर उपवास और

2.) क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में (By Regional Perspective)

स्थानीय श्रद्धालु:— इनकी आस्था में निरंतरता होती है। ये मंदिर को दैनिक जीवन का हिस्सा मानते हैं।

क्षेत्रीय (पड़ोसी राज्य):— विशेष रूप से श्रावणी मेले के दौरान इनका दृष्टिकोण 'कठिन तप' (जैसे सुल्तानगंज से पैदल यात्रा) पर अधिक केंद्रित रहता है।

दूरस्थ/विदेशी श्रद्धालु:— इनके लिए मंदिर का ऐतिहासिक और स्थापत्य महत्व के साथ – साथ

‘ शांति ’ मुख्य उद्देश्य होता है।

उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विवरण (Sample Table)

श्रेणी (Category)	समूह (Group)	संख्या (N=150)	प्रतिशत (%)
आयु वर्ग	18–35 वर्ष	60	40%
	36–55 वर्ष	65	43.3%
	55 वर्ष से अधिक	25	16.7%
शिक्षा का स्तर	स्नातक	50	33.3%
	स्नातकोत्तर	70	46.7%
	शोध/अन्य	30	20%
निवास क्षेत्र	शहरी	85	56.7%
	ग्रामीण	65	43.3%

विश्लेषण की व्याख्या (Interpretation)

सांख्यिकीय विवरण:— उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल 150 उत्तरदाताओं में से सर्वाधिक 43.3% लोग 36 – 55 आयु वर्ग के हैं। शिक्षा के स्तर पर, 46.7% उत्तरदाता स्नातकोत्तर हैं, जो शोध के उद्देश्यों के लिए एक परिपक्व और शिक्षित आधार प्रदान करता है।

सांस्कृतिक जागरूकता का स्तर:— परंपराओं पर प्रश्न के आधार पर यह कहा जा सकता है कि — “ 150 में से 120 उत्तरदाताओं (80%) ने माना कि वे स्थानीय मान्यताओं और पारंपरिक प्रणालियों का नियमित पालन करते हैं। ”

गुणात्मक अंतर्दृष्टि: — आंकड़ों के साथ-साथ हम यह भी कह सकते हैं कि ग्रामीण क्षेत्र के उत्तरदाताओं में अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति अधिक गहरा जुड़ाव देखा गया, जबकि शहरी युवाओं में आधुनिकता और परंपरा का मिश्रण पाया गया।

आयु वर्ग के आधार पर तुलना (Age - wise Comparison)

श्रद्धालुओं को तीन मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है:

युवा वर्ग (15 – 35 वर्ष):—

आस्था का स्वरूप:— आधुनिक पीढ़ी में आस्था के साथ-साथ जिज्ञासा और पर्यटन का भाव भी रहता है।

व्यवहार:— ये श्रद्धालु तकनीक (सोशल मीडिया, रील, फोटो) का उपयोग अधिक करते हैं। वे परंपराओं के वैज्ञानिक आधार को समझने की कोशिश करते हैं।

प्रेरणा:— मानसिक शांति और करियर या भविष्य की सफलताओं की कामना।

मध्यम आयु वर्ग (36 – 60 वर्ष):—

आस्था का स्वरूप:— यह वर्ग पारिवारिक जिम्मेदारियों और लोक-कल्याण की भावना से जुड़ा होता है।

व्यवहार:— अनुष्ठान, संकल्प और विधि – विधान के साथ पूजा करने पर अधिक ध्यान।

प्रेरणा:— परिवार की सुख – समृद्धि और बच्चों का उज्ज्वल भविष्य।

वृद्ध वर्ग (60 वर्ष से ऊपर):—

आस्था का स्वरूप:— पूर्ण समर्पण और मोक्ष की भावना।

व्यवहार:— कठिन शारीरिक कष्टों के बावजूद लंबी लाइनों में प्रतीक्षा करने का अदम्य साहस।

इनके लिए आस्था जीवन का अंतिम आधार है।

प्रेरणा:— आध्यात्मिक संतोष और मुक्ति की कामना।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध प्रबंध “बाबा बैद्यनाथ धाम के श्रद्धालुओं की आस्था का तुलनात्मक अध्ययन: विभिन्न आयु वर्ग एवं क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषण” के अंतर्गत बाबा बैद्यनाथ धाम की पावन भूमि पर उमड़ने वाले जन – सैलाब की धार्मिक चेतना, आस्था के विविध रूपों और उनके सामाजिक – सांस्कृतिक निहितार्थों का व्यापक मूल्यांकन किया गया है। संपूर्ण शोध के दौरान संकलित प्राथमिक आंकड़ों (150 श्रद्धालुओं के प्रतिदर्श) और द्वितीयक स्रोतों के गहन विश्लेषण के उपरान्त निम्नलिखित महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्राप्त होते हैं:

1. पीढ़ीगत अंतराल और आस्था का समन्वय (Age & Group Dynamics):

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समय के साथ आस्था की अभिव्यक्ति के तौर-तरीकों में बदलाव आया है, परंतु उसकी मूल भावना अपरिवर्तित है।

वृद्ध एवं प्रौढ़ वर्ग में जहाँ आस्था का स्वरूप अधिक पारंपरिक, शास्त्रीय मर्यादाओं से युक्त, मानसिक शांति और मोक्ष की कामना से प्रेरित है वहीं वे मंदिर परिसर की अव्यवस्थाओं के प्रति अधिक सहनशील दिखाई देते हैं।

इसके विपरीत, युवा वर्ग में आस्था का एक नया और ऊर्जावान स्वरूप देखने को मिलता है। युवाओं के लिए काँवर यात्रा एक आध्यात्मिक चुनौती, आत्म-खोज और सामूहिक सहभागिता का माध्यम है। युवा श्रद्धालु धार्मिक अनुष्ठानों के साथ-साथ सुगमता, स्वच्छता और तकनीकी सुविधाओं (जैसे

ऑनलाइन ई-पास, डिजिटल मैपिंग) को अधिक प्राथमिकता देते हैं। यह निष्कर्ष इस बात की ओर संकेत करता है कि धार्मिक स्थलों का भविष्य युवा पीढ़ी की अपेक्षाओं के अनुरूप आधुनिक प्रबंधन पर निर्भर करेगा।

2. भौगोलिक दूरियाँ और सांस्कृतिक एकात्मता (Regional Perspective):

क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य के तुलनात्मक विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि भौगोलिक दूरियाँ श्रद्धा के मार्ग में बाधक नहीं हैं, बल्कि वे अनुभवों में विविधता लाती हैं।

स्थानीय एवं पड़ोसी राज्यों (बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल) के श्रद्धालुओं के लिए बाबा बैद्यनाथ का स्वरूप एक 'कुलदेवता' या 'रक्षक' के रूप में है, जहाँ उनका आगमन नियमित, संक्षिप्त और पारंपरिक मन्त्र – अनुष्ठानों से जुड़ा होता है।

दूसरी ओर, दूरस्थ राज्यों (उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात व दक्षिण भारत) से आने वाले श्रद्धालुओं में एक विशेष प्रकार का सांस्कृतिक कौतूहल और गहरी दार्शनिक जिज्ञासा दिखाई देती है। उनके लिए यह यात्रा केवल जलार्पण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देवघर की संपूर्ण सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर को समझने का एक माध्यम है। यह विविधता सिद्ध करती है कि बाबा बैद्यनाथ धाम 'विविधता में एकता' के भारतीय मूलमंत्र का एक जीवंत प्रतीक है।

3. व्यवस्थागत सुधार और भविष्य की राह (Infrastructural Impacts):

आंकड़ों के विश्लेषण से यह भी उभरकर आया है कि प्रशासन द्वारा किए गए ढांचागत सुधारों, जैसे—काँवरिया पथ का सुदृढीकरण, स्वास्थ्य सुविधाएं और सुरक्षा व्यवस्था, ने सभी आयु वर्ग के श्रद्धालुओं के संतोष-स्तर (Satisfaction Level) को बढ़ाया है। विशेषकर महिला और वृद्ध श्रद्धालुओं की संख्या में वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि सुगम व्यवस्था धार्मिक पर्यटन को और अधिक बढ़ावा देती है।

अंतिम मूल्यांकन (Final Synthesis):

संक्षेप में कहा जा सकता है कि बाबा बैद्यनाथ धाम मात्र एक भौगोलिक या धार्मिक स्थल नहीं है, बल्कि यह करोड़ों हृदयों को जोड़ने वाला एक वृहद् मनोवैज्ञानिक और सामाजिक सेतु है। विभिन्न आयु वर्ग के विचारों में भिन्नता और क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद, 'बोल-बम' का सामूहिक जयघोष सभी संकीर्णताओं को मिटाकर एक समरस समाज का निर्माण करता है।

यह शोध न केवल वर्तमान समय में श्रद्धालुओं की बदलती प्रवृत्तियों और उनकी मनोवृत्ति को रेखांकित करता है, बल्कि भविष्य में देवघर के धार्मिक पर्यटन (Religious Tourism) के सतत विकास, मेला प्रबंधन और नीति-निर्माण के लिए एक व्यावहारिक और प्रामाणिक मार्गदर्शिका भी सिद्ध होगा।

सुझाव (Suggestions)

युवा श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु डिजिटल गाइडेंस और ऐतिहासिक महत्व की जानकारी को बढ़ाना। विभिन्न क्षेत्रों से आने वाले श्रद्धालुओं की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए प्रबंधन में सुधार।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography)

प्राथमिक एवं प्राच्य स्रोत (Primary & Classical Sources):

1. शिव पुराण (ज्ञान संहिता एवं कोटिरुद्र संहिता): गीताप्रेस, गोरखपुर। (वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग के प्राकट्य, रावण की कथा और माहात्म्य के संदर्भ हेतु)
2. पद्म पुराण (पाताल खण्ड): गीताप्रेस, गोरखपुर। (सुल्तानगंज से देवघर की काँवर यात्रा और उत्तरवाहिनी गंगा के धार्मिक महत्व हेतु)

3. मत्स्य पुराण एवं स्कन्द पुराण: चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी।

आधुनिक पुस्तकें एवं ऐतिहासिक स्रोत (Modern Books & Historical Sources):

1. ओ'मैली, एल.एस.एस. (1910). संताल परगना जिला गजेटियर (Santhal Parganas District Gazetteer), बंगाल सचिवालय प्रेस, कलकत्ता। (देवघर और बैद्यनाथ मंदिर के ऐतिहासिक व प्रशासनिक इतिहास हेतु)
2. झा, शशिकांत (2012). देवघर का इतिहास और संस्कृति, कला प्रकाशन, वाराणसी।
3. प्रसाद, डॉ. रामेश्वर (2015). झारखण्ड के प्रमुख तीर्थ स्थल एवं उनकी सांस्कृतिक विरासत, झारखण्ड झरोखा, राँची।
4. सिंह, डॉ. कुमार सुरेश (2008). पीपुल ऑफ इंडिया: झारखण्ड, एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस। (क्षेत्रीय सामाजिक संरचना के अध्ययन हेतु)
5. विद्यानंद, स्वामी (1998). वैद्यनाथ धाम माहात्म्य और काँवर यात्रा पद्धति, श्री वैद्यनाथ संस्कृत पुस्तकालय, देवघर।

समाजशास्त्रीय, धार्मिक एवं शोध पत्रिकाएँ (Sociological & Research Journals):

1. उपाध्याय, के.एन. (2018). "भारत में तीर्थाटन का समाजशास्त्र: एक अध्ययन", भारतीय समाजशास्त्रीय पत्रिका, अंक 14, पृष्ठ 45–62।
2. कुमार, अमित एवं शर्मा, पी. (2021). "काँवर यात्रा में युवाओं की भागीदारी: धार्मिकता और आधुनिकता का द्वंद्व", सांस्कृतिक विमर्श जर्नल, वॉल्यूम 8(2), पृष्ठ 112–125। (विभिन्न आयु वर्ग की आस्था के विश्लेषण हेतु)

3. राय, डॉ. आनंद (2023). “झारखण्ड के पर्यटन और धार्मिक स्थलों का क्षेत्रीय विकास में योगदान”, शोध सरिता, खंड 10, अंक 38, पृष्ठ 89–94।
4. सिन्हा, आर.के. (2019). “बाबा बैद्यनाथ धाम के अंतःप्रांतीय श्रद्धालु: एक सांस्कृतिक एवं क्षेत्रीय अध्ययन”, पूर्वोत्थान जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 12(4), 201–215। (क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य के तुलनात्मक अध्ययन हेतु)

शोध पद्धति (Research Methodology) – सहायक पुस्तकें:

1. कोठारी, सी.आर. (2014). रिसर्च मेथडोलॉजी: मेथड्स एंड टेक्निक्स (New Age International), नई दिल्ली। (नमूना चयन (Sampling) और प्रश्नावली निर्माण हेतु)
2. गुप्ता, डॉ. एस.पी. (2018). सांख्यिकी के सिद्धांत, सुल्तान चंद एंड संस, नई दिल्ली। (150 श्रद्धालुओं के डेटा और चार्ट विश्लेषण हेतु)

वेब एवं डिजिटल स्रोत (Web & Digital Sources):

1. देवघर जिला प्रशासन की आधिकारिक वेबसाइट: <https://deoghar-nic.in> (श्रद्धालुओं के आंकड़े, मेला प्रबंधन और भौगोलिक विवरण हेतु)
2. झारखण्ड पर्यटन विकास निगम (JTDC) की आधिकारिक रिपोर्ट (2024–2025): श्रावणी मेला एवं पर्यटन सांख्यिकी रिपोर्ट।